Webinar on "Integrated Management of Forest Diseases and Insect-Pest"

Amar Ujala
19-8-2020

कीट प्रबंधन की वैकल्पिक खोज करें वैज्ञानिक

देहरादून। केंद्र सरकार की ओर से 27 कीटनाशकों, रसायनों के इस्तेमाल पर रोक लगाए जाने के बाद वन व कृषि उपज के उत्पादन में उपजे हालात के मद्देनजर वन अनुसंधान संस्थान में सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें वैज्ञानिकों ने कीटनाशकों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध के बाद रोगों और कीटों को नियंत्रित करने के लिए वैकल्पिक उपायों पर मंथन किया।

आईसीएफआरई के महानिदेशक व वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि कीटनाशकों पर प्रतिबंध के बाद वैज्ञानिकों को रोगों और कीटों के प्रबंधन के लिए वैकल्पिक तरीकों को खोजना होगा। इसके लिए वैज्ञानिकों को शोध में तेजी लानी होगी। गोविंद वल्लभ पंत विश्वविद्यालय के प्रो. केपी सिंह ने रोगों के पूर्वानुमान पर अधिक से अधिक शोध पर जोर दिया। साथ ही कीटनाशकों के वैकल्पिक उपायों की जानकारी दी। डीआरडीओ के पूर्व निदेशक डॉ. विजय वीर ने खतरनाक कीटों को आकर्षित करने वाले रसायनों का अधिक से अधिक इस्तेमाल कर वन उपज व खेती को कीटों के हमलों से बचाने पर जोर दिया। वन संरक्षक डॉ. राजीव मिश्रा ने शीशम पेड़ों के अधिक संख्या में सूखने पर गहरी चिंता जताई। वैज्ञानिक डॉ. आरसी धीमान ने पॉपुलर के पेड़ों में लगने वाले नए रोगों के बारे में ध्यान आकृष्ट किया। डॉ. सुधीर कुमार शर्मा ने सूखा रोग के कारण उत्पाद की घटती कीमत पर गहरी चिंता जताई। सेमिनार में डॉ. के देवराजन, डॉ. एनएसके हर्ष, डॉ. आरके ठाकुर, डॉ. जैकब, डॉ. कार्तिकेय, डॉ. राजेश कुमार समेत कई वैज्ञानिकों ने संबोधित किया। (मा.सि.रि.)

Dainik Jagran
19-8-2020

वन कीटों के लिए जैव नियंत्रक बेहतर

देहरादून : देश में 27 तरह के कीटनाशक प्रतिबंधित किए जाने के बाद वन कीटों की रोकथाम की चुनौतियां बढ़ गई हैं। हालांकि, इसके विकल्प के लिए वन विज्ञानियों ने जैव नियंत्रकों को बढ़ावा देने की बात कही। ताकि कीटनाशकों की जरूरत ही न पड़े।यह बात मंगलवार को वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में जैव नियंत्रकों पर आयोजित वेबिनार में कही गई। इस मौके पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक एएस रावत ने कहा कि प्रतिबंधित कीटनाशक प्रकृति के लिए नुकसानदायक भी हैं। इसकी जगह जैव नियंत्रकों का प्रयोग सुरक्षित है।(जासं)

I Next

19-8-2020

एफआरआई में जैव नियंत्रकों पर वेबिनार का आयोजन

वन कीटो के लिए जैव नियंत्रक बेहतर

DEHRADUN (18 Aug): देश में 27 तरह के कीटनाशक प्रतिबंधित किए जाने के बाद वन कीटों की रोकथाम की चुनौतियां बढ़ गई हैं. हालांकि, इसके विकल्प के लिए वन विज्ञानियों ने जैव नियंत्रकों को बढ़ावा देने की बात कही. ताकि कीटनाशकों की जरूरत ही न पड़े. यह बात मंगलवार को वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में जैव नियंत्रकों पर आयोजित वेबिनार में कही गई. इस मौके पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक एएस रावत ने कहा कि प्रतिबंधित कीटनाशक प्रकृति के लिए नुकसानदायक भी हैं. इसकी जगह जैव नियंत्रकों का प्रयोग सुरक्षित है. हालांकि, इसके लिए अभी विभिन्न स्तर पर शोध कार्य बढ़ाने की जरूरत है. वहीं, प्रयागराज के वन संरक्षक डॉ. राजीव मिश्रा ने रोग के कारण सूख रहे शीशम के पेड़ों के लिए बेहतर जैव नियंत्रकों की खोज पर बल दिया. वेबिनार में गोविंद बल्लभ पंत यूनिवर्सिटी के प्रो. केपी सिंह, डॉ. आरसी धीमान, डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. एस मरीमुथू, के. देवराजन, डॉ. आरके ठाकुर आदि उपस्थित रहे.

Jan Bharat Mail

19-8-2020

वन रोग और कीट प्रकोप के एकीकृत प्रबंधन पर वेबिनार

देहरादून, संवाददाता। वन संरक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा वन रोगों व कीटों के एकीकृत प्रबंधन पर एक वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार में कई वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियंत्रण उद्योगों के प्रतिष्ठित पदाधिकरियों ने भाग लिया। महानिदेशक, आई. सी.एफआर.ई. अरूण सिंह रावत ने 27 कीट नाशकों पर लगे हालिया प्रतिबंध के मद्देनजर रोग और कीट प्रबंधन के वैकल्पिक तरीकों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. के. पी. सिंह जी.बी.पी.यू.ए.टी., पन्तनगर ने रोग पूर्वानुमान सबंधित शोध कार्य का विवरण दिया और इस विधा का उपयोग कर कीटनाशकों के उपयोग को कम करने पर बल दिया। डा. विजय वीर, पूर्व निदेशक, डी.आर.डी.ओ. ने प्रबंधन हेतु कीटों को आकृष्ट करने वाले रसायन के उपयोग करने की सलाह दी। डा. राजीव मिश्रा, वन संरक्षक, प्रयाग राज ने शीशम पेडों की अत्याधिक संख्या में सूखने को प्रकाशित करते हुए विभिन्न कारकों पर शोध की आवश्यकता पर बल दिया।

डा. आर.सी. धीमान, पूर्व प्रमुख वीमको सीड लिंग, ने हाल में पोपलर पर देखे गए कई रोगों व कीटों पर सबका ध्यान आकृष्ट किया और पोपलर उत्पादक सचिन त्यागी द्वारा बताई गई इस पेड़ में आ रही गंभीर समस्याओं का निराकरण किया।

News Detail
19-8-2020

वन रोग और कीट प्रकोप के एकीकृत प्रबंधन पर वेबिनार

एफआरआई के वन संरक्षण प्रभाव ने किया आयोजन, वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियंत्रण उद्योग के कई पदाधिकारियों ने लिया भाग

देहरादून, संवाददाता। वन संरक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने वन रोगों व कीटों के एकीकृत प्रबंधन पर एक वेबिनार आयोजित किया । वेबिनार में कई वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियंत्रण उद्योगों के प्रतिष्ठित पदाधिकरियों ने भाग लिया। महानिदेशक, आई.सी.एफ.आर.ई. अरूण सिंह रावत ने 27 कीटनाशकों पर लगे हालिया प्रतिबंध के मद्देनजर रोग और कीट प्रबंधन के वैकल्पिक तरीकों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. केपी सिंह जीबीपीयूएटी पन्तनगर ने रोग पूर्वानुमान सर्वेधित शोध कार्य का विवरण दिया और इस विधा का उपयोग कर कीटनाशकों के उपयोग को कम करने पर बल दिया। डा. विजय वीर, पूर्व निदेशक, डी.आर.डी.ओ. ने प्रबंधन के लिए कीटों को आकृष्ट करने वाले रसायन के उपयोग करने की सलाह दी। डा. राजीव मिश्रा, वन संरक्षक, प्रयागराज ने शीशम पेडों की अत्याधिक संख्या में सूखने को प्रकाशित करते हुए विभिन्न कारकों पर शोध की आवश्यकता पर बल दिया। डा. आर.सी. धीमान, पूर्व प्रमुख वीमको सीडलिंग ने हाल में पोपलर पर देखे गए कई रोगों व कीटों पर सबका ध्यान आकृष्ट किया। पोपलर उत्पादक सचिन त्यागी की बताई गई इस पेड़ में आ रही गंभीर समस्याओं का निराकरण किया। जेके पेपर मिल्स का प्रतिनिधित्व कर रहे डा. सुधीर कुमार शर्मा ने केसुराईना के सूखा रोग के कारण उत्पाद की घटती कीमत पर चिंता व्यक्त की। टी स्टेन्स कंपनी के उपाध्यक्ष डा. एस.मरीमुथू ने विभिन्न जैव नियंत्रकों और जैव उर्वरकों को रोग नियंत्रण में एक अच्छा विकल्प बताया व इसे उपयोग में लाने का आग्रह किया। के. देवराजन, अध्यक्ष कोयम्बटूर हर्बल एवं ट्री ग्रोअर, एसोसियेशन ने कोयम्बटूर क्षेत्र में पेश आ रही व्यावसायिक वनों की स्वास्थ समस्यों का उल्लेख किया। इन समस्याओं के निराकरण के लिए डा.एन.एस.के.हर्ष और डा. आरके. ठाकुर ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। विभिन्न आई.सी.एफ.आर.ई के वैज्ञानिकों डा. जैकब, डा. कार्तिकेन व डा. राजेश कुमार ने अपने शोध कार्यों का प्रर्दशन किया।

The Pioneer
19-8-2020

Need alternatives to manage disease & pests: Rawat

PNS ■ DEHRADUN

The Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) director general AS Rawat emphasised the need for alternative methods for disease and pest management, especially in wake of the recent ban on 27 pesticides.

He was speaking at a webinar on integrated management of forest diseases and insect pests organised by the Forest Research Institute.

Among the participating scientists, former director of DRDO, Vijay Veer proposed an interesting use of insect attractants for their management. Professor KP Singh from GBPUAT, Pantnagar gave a detailed account of disease forecasting for minimising the use of pesticides and early control of diseases.

S Marimuthu, associate vice president, T Stanes and Company Limited, Coimbatore showed different ecofriendly biological control and biofertiliser products and urged for trial of their efficacy.

Coimbatore District Herbal and Tree Growers Association president K Devarajan gave a brief account of the health problems faced in the field which was later addressed by subject experts NSK Harsh and RK Thakur.

Scientists from different ICFRE institutes also presented their research work on diseases and insect-pests.

Pradhan Times
19-8-2020

वन रोग और कीट प्रकोप के एकीकृत प्रबंधान पर वेबिनार आयोजित

देहरादून। आज 18 अगस्त, 2020 को वन संरक्षण प्रभाग, वन अनुसंधाान संस्थान, देहरादून द्वारा वन रोगों व कीटों के एकीकृत प्रबंधान पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार में कई वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियं=ण उद्योगों के प्रतिष्ठित पदाधिकरियों ने भाग लिया। महानिदेशक, आईसीएफआरई अरूण सिंह रावत ने 27 कीटनाशकों पर लगे हालिया प्रतिबंधा के मद्देनजर रोग और कीट प्रबंधान के वैकल्पिक तरीकों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. के पी सिंह जीबीपीयूएटी, पन्तनगर ने रोग पूर्वानुमान सबंधित शाोधा कार्य का विवरण दिया और इस विधा का उपयोग कर कीटनाशकों के उपयोग को कम करने पर बल दिया। डा. विजय वीर, पूर्व निदेशक, डीआरडीओ ने प्रबंधान हेतु कीटों को आकृष्ट करने वाले रसायन के उपयोग करने की सलाह दी। डा. राजीव मिश्रा, वन संरक्षक, प्रयागराज ने शीशम पेडों की अत्याधिाक संख्या में सूखने को प्रकाशित करते हुए विभिन्न कारकों पर शोधा की आवश्यकता पर बल दिया। डा. आरसी धाीमान, पूर्व प्रमुख वीमको सीडलिंग, ने हाल में पोपलर पर देखे गए कई रोगों व कीटों पर सबका धयान आकृष्ट किया और पोपलर उत्पादक सचिन त्यागी द्वारा बताई गई इस पेड़ में आ रही गंभीर समस्याओं का निराकरण किया। जेके पेपर मिल्स का प्रतिनिधित्व कर रहे डा. सुधीर कुमार शर्मा ने केसुराईना के सूखा रोग के कारण उत्पाद की घटती कीमत पर चिंता व्यक्त की। टी स्टेन्स कंपनी के उपाधयक्ष डा. एस. मरीमुथु ने विभिन्न जैव नियंत्रकों और जैव उर्वरकों को रोग नियंत्रण में एक अच्छा विकल्प बताया व इसे उपयोग में लाने का आग्रह किया। के देवराजन, अधयक्ष कोयम्बटूर हर्बल एवं ट्री ग्रोअर, एसोसियेशन ने कोयम्बटूर क्षेत्र में पेश आ रही व्यावसायिक वनों की स्वास्थ समस्यों का उल्लेख किया। इन समस्याओं के निराकरण हेतु डा. एनएसके हर्ष और डा. आरके ठाकुर ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। विभिन्न आईसीएफआरई के वैज्ञानिकों डा. जेकब, डा. कार्तिकेन व डा. राजेश कुमार ने अपने दिलचस्प शोधा कार्यो का प्रर्दशन किया। यह वेबिनार धान्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

Rashtriya Sahara
19-8-2020

कीटनाशकों का उपयोग को कम करने पर जोर

एफआरआई में वन रोग व कीट प्रबंधन पर आयोजित किया गया वेबिनार

देहरादून (एसएनबी)। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) के वन संरक्षण प्रभाग द्वारा मंगलवार को वन रोगों व कीटों के एकीकृत प्रवंधन पर वेविनार आयोजित किया गया। इसमें कई वैज्ञानिकों, वनाधिकारियों के अलावा कागज व जैव नियंत्रण उद्योगों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक अरुण रावत ने वतौर मुख्य अतिथि वेविनार में प्रतिभाग किया। उन्होंने 27 कीटनाशकों पर लगे हालिया प्रतिवंध के मद्देनजर रोग व कीट प्रवंधन के वैकल्पि तरीकों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। जीवी पंतनगर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर केपी सिंह ने रोग पूर्वानुमान से संवंधित शोध कार्यों का विवरण दिया। कहा कि इसका प्रयोग कर कीटनाशकों के उपयोग को कम किया जा सकता है। डीआरडीओ के पूर्व निदेशक डा. विजय वीर ने प्रवंधन हेतु कीटों को आकृष्ट करने वाले रसायन के उपयोग करने की सलाह दी। डा. राजीव मिश्रा ने शीशम पेड़ों के अत्यधिक संख्या में सूखने को प्रकाशित करते हुए विभिन्न कारकों पर शोध की आवश्यकता पर वल दिया। डा. आरसी धीमान ने हाल में पोपलर पर देखे गए कई रोगों व कीटों पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। डा. एस मरीमुथू, सचिन त्यागी, डा. सुधीर कुमार शर्मा, के देवराजन, डा. आरके ठाकुर, डा. एनएसके हर्ष, डा. जैकव व डा. राजेश कुमार आदि ने विचार रखे।

Shah Times
19-8-2020

वन रोग और कीट प्रकोप के एकीकृत प्रबंधन पर वेबिनार

●एफआरआई के वन संरक्षण प्रभाव ने किया आयोजन ● वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियंत्रण उद्योग के कई पदाधिकारियों ने लिया भाग

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून । वन संरक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने वन रोगों व कीटों के एकीकृत प्रबंधन पर एक वेबिनार आयोजित किया । वेबिनार में कई वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों, कागज और जैव नियंत्रण उद्योगां के प्रतिष्ठित पदाधिकरियों ने भाग लिया।

महानिदेशक, आई.सी.एफ. आर.ई. अरूण सिंह रावत ने 27 कीटनाशकों पर लगे हालिया प्रतिबंध के मद्देनजर रोग और कीट प्रबंधन के वैकल्पिक तरीकों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. केपी सिंह जीबीपीयूएटी पन्तनगर ने रोग पूर्वानुमान सर्बंधित शोध कार्य का विवरण दिया और इस विधा का उपयोग कर कीटनाशकों के उपयोग को कम करने पर बल दिया। डॉ. विजय वीर, पूर्व निदेशक, डी.आर. डी.ओ. ने प्रबंधन के लिए कीटों को आकृष्ट करने वाले रसायन के उपयोग करने की सलाह दी। डॉ. राजीव मिश्रा, वन संरक्षक, प्रयागराज ने शीशम पेडों की अत्याधिक संख्या में सूखने को प्रकाशित करते हुए विभिन्न कारकों पर शोध की आवश्यकता पर बल दिया। डा. आर. सी. धीमान, पूर्व प्रमुख वीमको सीडलिंग ने हाल में पोपलर पर देखे गए कई रोगों व कीटों पर सबका ध्यान आकृष्ट किया । पोपलर उत्पादक सचिन त्यागी की बताई गई इस पेड़ में आ रही गंभीर समस्याओं का निराकरण किया। जेके पेपर मिल्स का प्रतिनिधित्व कर रहे डा. सुधीर कुमार शर्मा ने केसुराईना के सूखा रोग के कारण उत्पाद की घटती कीमत पर चिंता व्यक्त की। टी स्टेन्स कंपनी के उपाध्यक्ष डा. एस.मरीमुथू ने विभिन्न जैव नियंत्रकों और जैव उर्वरकों को रोग नियंत्रण में एक अच्छा विकल्प बताया व इसे उपयोग में लाने का आग्रह किया।

के. देवराजन, अध्यक्ष कोयम्बटूर हर्बल एवं ट्री ग्रोअर, एसोसियेशन ने कोयम्बटूर क्षेत्र में पेश आ रही व्यावसायिक वनों की स्वास्थ समस्यों का उल्लेख किया। इन समस्याओं के निराकरण के लिए डा. एन.एस.के.हर्ष और डा. आरके. ठाकुर ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। विभिन्न आई.सी.एफ.आर.ई के वैज्ञानिकों डा. जैकब, डा. कार्तिकेन व डा. राजेश कुमार ने अपने शोध कार्यो का प्रर्दशन किया।

The Hawk

19-8-2020

Webinar On Integrated Management Of Forest Diseases And Insect-Pest

Dehradun (The Hawk): A webinar on integrated management of forest diseases and insect-pest was organized by Forest Protection Division, Forest Research Institute, Dehradun. Several scientists, forest officers, eminent people from paper and biocontrol industries participated in the webinar. At the onset Mr. A.S. Rawat, Director General, ICFRE emphasized the need of alternative methods for disease and pest management, especially in wake of recent ban on 27 pesticides. Prof. K.P. Singh from GBPUAT, Pantnagar gave a detailed account of disease forecasting for minimizing the use of pesticides and early control of diseases. Dr. Vijay Veer, Ex-Director, DRDO proposed an interesting use of insect attractants for their management. Dr. Rajiv Mishra, Conservator of Forests, Prayagraj emphasized the factors commonly associated with Shisham mortality and appealed for their redressal. Dr. R.C. Dhiman, Ex-head, WIMCO seedlings gave a detailed account of agroforestry diseases and insect-pest problem and addressed the serious health issues of poplar raised by a progressive poplar grower Mr. Sachin Tyagi. Dr. Sudhir Kumar Sharma from JK Paper Mills highlighted casuarinas wilt disease and the reduction in productivity on this account. Dr. S. Marimuthu, Associate Vice President, T Stanes and Company LTD., Coimbatore showed different ecofriendly biological control and biofertilizer products and urged to try their efficacy. Mr. K. Devarajan, President, Coimbatore District Herbal & Tree Growers Association gave a brief account of the health problems faced in field which was later addressed by Dr. NSK Harsh and Dr. RK Thakur. Scientists from different ICFRE institutes Dr. Jacob, Dr. Karthikeyan and Dr. Rajesh Kumar showcased their interesting research work on diseases and insect-pests. The webinar was concluded with vote of thanks.